❍ 23 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗ज्ञान और योग को स्वरुप में लाये ?∗

➢➢ ∗सिर्फ योग लगाने वाले नहीं, बल्कि योगी जीवन जीने वाले बनकर रहे ?∗

➢➢ ∗स्वयं को खुशनसीब आत्मा समझा ?∗

➢➢ ∗नष्टोमोहा बनकर रहे ?∗

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ अब सेवा के कर्म के भी बन्धन में नहीं आओ। ∗हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेंट, हमारी सहयोगी आत्माएं, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है, इस कर्मबन्धन से कर्मातीत। तो कर्मातीत बनना है∗ और 'यह वही हैं, यही सब कुछ हैं,' यह महसूसता दिलाए आत्माओं को समीप ठिकाने पर लाना है।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं हीरो पार्टधारी आत्मा हूँ"*

〰✧ अपने को इस विशाल ड्रामा के अन्दर हीरो पार्टधारी आत्मायें अनुभव करते हो? आप सबका हीरो पार्ट है। हीरो पार्टधारी क्यों बने? *क्योंकि जो ऊंचे ते ऊंचा बाप जीरो है - उसके साथ पार्ट बजाने वाले हो। आप भी जीरो अर्थात् बिन्दी हो। लेकिन आप शरीरधारी बनते हो और बाप सदा जीरो है।*

〰✧ *तो जीरो के साथ पार्ट बजाने वाले हीरो एक्टर हैं - यह स्मृति रहे तो सदा ही यथार्थ पार्ट बजायेंगे, स्वत: ही अटेन्शन जायेगा। जैसे हद के ड्रामा के अन्दर हीरो पार्टधारी को कितना अटेन्शन रहता है! सबसे बड़े ते बड़ा हीरो पार्ट आप सबका है। सदा इस नशे और खुशी में रहो - वाह, मेरा हीरो पार्ट जो सारे विश्व की आत्मायें बार-बार हेयर-हेयर करती हैं!*

〰✧ यह द्वापर से जो कीर्तन करते हैं यह आपके इस समय के हीरो पार्ट का ही यादगार है। कितना अच्छा यादगार बना हुआ है! आप स्वयं हीरो बने हो तब आपके पीछे अब तक भी आपका गायन चलता रहता है। अन्तिम जन्म में भी अपना गायन सुन रहे हैं। गोपीवल्लभ का भी गायन है तो ग्वाल बाप का भी गायन है, गोपिकाओंका भी गायन है। *बाप का शिव के रूप में गायन है तो बच्चों का शक्तियों के रूप में गायन है। तो सदा हीरो पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हैं - इसी स्मृति में खुशी में आगे बढ़ते चलो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ सभी अपने को राजयोगी अनुभव करते हो? योगी सदा अपने आसन पर बैठते हैं तो आप सबका आसन कौन-सा है? आसन किसको कहेंगे? *भिन्न-भिन्न स्थितियाँ भिन्न-भिन्न आसन हैं।* कभी अपने स्वमान की स्थिति में स्थित होते हो तो स्वमान की स्थिति आसन है।

〰✧ कभी *बाप के दिलतख्तनशीन स्थिति में स्थित होते तो वह दिलतखत स्थिति आसन बन जाती है।* जैसे आसन पर स्थित होते हैं, एकाग्र होकर बैठते हैं, ऐसे आप भी भिन्न-भिन्न स्थिति के आसन पर स्थित होते हो।

〰✧ तो वेरायटी अच्छा लगता है ना। एक ही चीज कितनी भी बढिया हो, लेकिन वही चीज बार-बार अगर यूज करते रहो तो इतनी अच्छी नहीं लगेगी, वेरायटी अच्छी लगेगी। तो *बापदादा ने वेरायटी स्थितियों के वेरायटी आसन दे दिये हैं।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

〰✧ *ब्राह्मण जीवन अर्थात वाह-वाह! हाय-हाय नहीं। शारीरिक व्याधि में भी हाय-हाय नहीं, वाह! यह भी बोझ उतरता है।* अगर १० मन से आपका ३-४ मन बोझ उतर जाये तो अच्छा है या हाय-हाय? क्या है? वाह बोझ उतरा! *हाय मेरा पार्ट ही ऐसा है! हाय मेरे को व्याधि छोड़ती ही नहीं है! आप छोड़ो या व्याधि छोड़ेगी? वाह-वाह! करते जाओ तो वाह-वाह! करने से व्याधि भी खुश हो जायेगी। तो व्याधि को भी वाह-वाह! कहो।* हाय यह मेरे पास ही क्यों आई, मेरा ही हिसाब है। प्राप्ति के आगे हिसाब तो कुछ भी नहीं है। *प्राप्तियाँ सामने रखो और हिसाब-किताब सामने रखो तो वह क्या है? क्या लगेगा? बहुत छोटी-सी चीज़ लगेगी। मतलब तो ब्राह्मण जीवन में कुछ भी हो जाये, पॉजिटिव रूप में देखो।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- नम्बरवन बनने ज्ञान और योग को स्वरूप में लाना"*

➳ _ ➳ ऊँची पहाड़ी पर खड़ी मै आत्मा... नीचे की दुनिया देख रही हूँ... और दुनिया से अलग अपनी ऊँची खुबसूरत स्थिति देखकर सोचती हूँ... इतना प्यारा निर्विकारी जीवन तो कभी ख्वाबो में भी न था... जो आज जीवन की हकीकत है... कभी तो विकार ही जीवन का सत्य बने हुए थे... उनसे हटकर मेरा भी कोई सत्य है यह दूर दूर तक पता न था... *कैसे प्यारे बाबा ने जीवन में आकर, जीवन को सच्ची खुशियो और रौनक से सजाया है.*.. और दुखो की मायूसी हटाकर, सुखदायी मुस्कान से मुझे इतना सुंदर बनाया है... दिल से धन्यवाद करने मै आत्मा... अपने प्यारे बाबा के पास उड़ चलती हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सतोप्रधान बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... देहभान और देह के विकारो ने कितना निस्तेज कर दिया है... अपनी दिव्यता को ही भूल कितने साधारण बन पड़े हो... अब मीठे बाबा की यादो में ज्ञान और योग से... उसी खोये दिव्य सौंदर्य को पुनः पा लो... *प्यार से मीठे बाबा को याद करो और सतोप्रधान बनकर, विश्व के मालिक बन, सुखो का आनन्द लो.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की अमूल्य शिक्षाओ को अपनी बुद्धि पात्र में भरते हुए कहती हूँ :-* मीठे मीठे बाबा मेरे... आपकी प्यारी सी छत्रछाया में मै आत्मा... विकारो जीवन से मुक्त होकर दिव्यता से भरती जा रही हूँ... *ज्ञान और योग की चमक ने जीवन को सदा का रौशन किया है* और मुझे पवित्रता से सजाया है..."

❉ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा को अपनी मीठी यादो में तेजस्वी बनाते हुए कहते है :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... कितने खिले और खुबसूरत फूल थे... पर देह के जंजालों में फंसकर, विकारो की कालिमा में कितने काले हो गए... *अब यादो की अग्नि में स्वयं को उसी आभा में फिर से निखारो.*.. पनः

सतोप्रधान बनकर, देवताई सुखो के अधिकारी बनकर विश्व धरा पर सुखो भरा राज्य भाग्य पाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा को मेरा भाग्य इतना मीठा और प्यारा बनाने पर कहती हूँ :-* "मीठे दुलारे बाबा मेरे... मै आत्मा *सदा आपकी यादो की छाँव में... अपने खोये वजूद को पाकर, पावनता की सुंदरता से... देवताई ताजोतख्त पा रही हूँ.*.. दुखो से मुक्त होकर, सुखो की मालकिन बनती जा रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को रावण पर जीत पाने का राज समझाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... ईश्वर पिता के साये में सतोप्रधान बनकर, खुशियो से महकती खुबसूरत दुनिया को अपनी बाँहों में पाओ... *ज्ञान के मनन और योग की खुशबु से. विकारो रुपी रावण को सहज ही जीत जाओ..*. श्रीमत का हाथ पकड़ इस दलदल से सहज ही निकल जाओ...."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा से कहती हूँ :-* "मीठे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा आपको पाकर धन्य धन्य हो गयी हूँ... आपकी प्यारी बाँहों में पलकर कितनी शक्तिशाली बन गयी हूँ... *शक्तियो और दिव्य गुणो को पाकर, विकारो को जीतकर मुस्करा रही हूँ..*.ज्ञान की अमीरी और योग से मालामाल हूँ..."मीठे बाबा से मीठी रुहरिहानं कर मै आत्मा... स्थूल वतन में आ गयी...

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- स्वयं को खुशनसीब अनुभव करना*"

➳ _ ➳ अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में ला कर मैं अपने संगमयुगी ब्राह्मण जीवन के बारे में विचार कर रही हूं कि *कितनी पदमा पदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जो स्वयं भगवान ने आ कर ब्राह्मण जीवन रूपी

अनमोल तोहफा मुझे दे कर मेरे कौड़ी तुल्य जीवन को हीरे तुल्य बना दिया*। कोटो में कोई, कोई में भी कोई का जो गायन है वो मेरे लिए ही तो है। मैं ही तो हूँ वो कोटो में कोई और कोई में भी कोई वो भाग्यशाली आत्मा जिसे स्वयं भगवान ने चुना है। बड़े बड़े महा मण्डलेशवर, साधू सन्यासी भगवान की महिमा के गीत तो गाते आये लेकिन आज तक उसे पहचान नही पाए।

➳ _ ➳ जिस भगवान की महिमा के गीत दुनिया गाती है वो भगवान रोज मेरे सम्मुख आकर मेरी महिमा के गीत गाता है। रोज मुझे स्मृति दिलाता है कि मैं महान आत्मा हूँ। मैं विशेष आत्मा हूँ। मैं इस दुनिया की पूर्वज आत्मा हूँ। *अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य के बारे में विचार करते करते मैं अपने मीठे प्यारे बाबा की मधुर याद में एकाग्र हो कर जैसे ही बैठती हूँ ऐसा अनुभव होता है जैसे अपने लाइट माइट स्वरूप में बाबा मेरे सम्मुख आ कर खड़े हो गए हैं*।

➳ _ ➳ बाबा अपना हाथ मेरे सिर पर रख कर मुझे श्रेष्ठ स्वमानों की स्मृति दिलाते हुए मुझ से कह रहें हैं - मेरे मीठे बच्चे, तुम साधारण नही हो। मैंने तुम्हे संसार की करोड़ो आत्माओं में से चुना है महान कार्य करने के लिए। इसलिये तुम बहुत महान हो। *अपनी सर्वशक्तियाँ, सर्व खजाने मैंने तुम्हे दे दिए हैं। इसलिए इस बात को स्वीकार करो कि तुम मास्टर सर्वशक्तिवान हो*। मंदिरों में तुम्हारी ही पूजा हो रही है। तुम इष्ट देवी हो। सबके विघ्नों को हरने वाले तुम ही विघ्न विनाशक गणेश हो। तुम पूर्वज हो। तुम विजय माला के मणके हो। तुम्हारी माला सिमर कर आज भी भक्त समस्यायों से मुक्त हो रहें हैं। तुम दुनिया की सभी आत्माओं को दुखो से छुड़ाने वाले फरिश्ते हो।

➳ _ ➳ स्वयं भगवान के मुख से अपने लिए इतने श्रेष्ठ स्वमान पा कर एक अलौकिक रूहानी नशे से मैं ब्राह्मण आत्मा भरपूर होती जा रही हूं। *मुझे अनुभव हो रहा है जैसे एक जागती हुई ज्योति प्रकाश के शरीर में भृकुटि सिहांसन पर विराजमान हो कर चमक रही है जिसकी दिव्य आभा चारों और फैल रही है*। अपनी दिव्य आभा चारों और फैलाती हुई अपनी प्रकाश की सूक्ष्म काया के साथ मैं आत्मा अब साकारी देह से निकल कर अपने भाग्य विधाता भगवान बाप से मिलन मनाने चल पड़ती हूँ, इस साकारी दुनिया को छोड़ उस निराकारी दुनिया में जहां मेरे भाग्य के रचयिता मेरे बाबा रहते हैं।

➳ _ ➳ सेकेंड में पांच तत्वों की बनी इस साकारी दुनिया को पार कर मैं पहुंच जाती हूँ अपने शिव पिता के पास। अब मैं देख रही हूँ स्वयं को अपने स्वीट साइलेन्स होम परमधाम में। *सामने ज्योति पुंज के रूप में मेरे भाग्य की रचना करने वाले मेरे मीठे शिव बाबा और उनके सामने मैं चमकती हुई ज्योति बिंदु आत्मा*। मन ही मन संकल्पो के द्वारा मैं अपने मीठे बाबा का आभार प्रकट कर रही हूं । मुझे नवजीवन देने वाले मेरे मीठे बाबा आपका निस्वार्थ असीम प्यार पा कर मेरा जीवन धन्य धन्य हो गया है। *इस जीवन में अब कुछ भी पाने की इच्छा शेष नही रही*। जो मैंने पाना था वो आपसे मैंने सब कुछ पा लिया है।

➳ _ ➳ मेरे संकल्पो में छुपे प्रेम के अहसास को मेरे मीठे बाबा जान कर और समझ कर अब *अपना असीम प्रेम शक्तिशाली किरणों के रूप में निरन्तर मुझ पर बरसा रहे हैं* और उनके प्रेम की गहराई में मैं डूबती जा रही हूं।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं उमंग - उत्साह के आधार पर सदा उड़ती कला का अनुभव करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं हिम्मतवान आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव दुआयें देती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव दुआयें लेती हूँ ।*
✺ *मैं श्रेष्ठ पुरुषार्थी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. *जिस भी बच्चे को देखें, जो भी मिले, संबंध-सम्पर्क में आये, उन्हों को यह लक्षण दिखाई दें कि यह जैसे परमात्मा बाप, ब्रह्मा बाप के गुण हैं, वह बच्चों के सूरत और मूरत से दिखाई दें।* अनुभव करें कि इनके नयन, इनके बोल, इन्हों की वृत्ति वा वायब्रेशन न्यारे हैं।

➳ _ ➳ 2. *जो बच्चा जहाँ भी रहता है, जो भी कर्मक्षेत्र है, हर एक बच्चे से बाप समान गुण, कर्म और श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल अनुभव में आये, इसको बापदादा कहते हैं - बाप समान बनना।* जो अभी तक संकल्प है बाप समान बनना ही है, वह संकल्प अभी चेहरे और चलन से दिखाई दे। *जो भी संबंध-सम्पर्क में आये उनके दिल से यह आवाज निकले कि यह आत्मायें बाप समान हैं।*

➳ _ ➳ बापदादा अभी सभी बच्चों से यह प्रत्यक्षता चाहते हैं। जैसे वाणी द्वारा प्रत्यक्षता करते हो तो वाणी का प्रभाव पड़ता है, उससे भी ज्यादा प्रभाव गुण और कर्म का पड़ता है। *हर एक बच्चे के नयनों से यह अनुभव हो कि इन्हों के नयनों में कोई विशेषता है।* साधारण नहीं अनुभव करें। अलौकिक हैं। *उन्हों के मन में क्वेश्चन उठे कि यह कैसे बनें, कहाँ से बनें। स्वयं ही सोचें

और पूछें कि बनाने वाला कौन?* जैसे आजकल के समय में भी कोई बढ़िया चीज देखते हो तो दिल में उठता है कि यह बनाने वाला कौन है! ऐसे अपने बाप समान बनने की स्थिति द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करो।

➳ _ ➳ आजकल मैजारिटी आत्मायें सोचती हैं कि क्या इस साकार सृष्टि में, इस वातावरण में रहते हुए ऐसे भी कोई आत्मायें बन सकती हैं! तो *आप उन्हों को यह प्रत्यक्ष में दिखाओ कि बन सकता है और हम बने हैं। आजकल प्रत्यक्ष प्रमाण को ज्यादा मानते हैं। सुनने से भी ज्यादा देखने चाहते हैं* तो चारों ओर कितने बच्चे हैं, हर एक बच्चा बाप समान प्रत्यक्ष प्रमाण बन जाए तो मानने और जानने में मेहनत नहीं लगेगी।

✺ *ड्रिल :- "बाप समान प्रत्यक्ष प्रमाण बनने का अनुभव"*

➳ _ ➳ अब तक मैं आत्मा झूठे जिस्मानी प्रेम की मृगतृष्णा में भटक रही थी... जिसके द्वारा जन्म जन्मांतर दुःख पाती रही... *मेरे मीठे बाबा ने कोटो में कोई और कोई में भी कोई... मुझ आत्मा को दुःखों से छुड़ा... अपने स्नेह... प्यार की पालना देकर... अपने गले से लगा लिया... वाह रे मैं भाग्यशाली आत्मा!!* जो परमात्मा स्वयं मुझे अपने जैसा बनने की पढ़ाई पढ़ाने रोज़ धरा पर आते हैं...

➳ _ ➳ अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य को देख कर गर्व करती मैं आत्मा... स्वयं भगवान मेरा है... उसका सबकुछ मेरा हो गया है... *उसने अपने सर्व वरदान और सर्वशक्तियां मुझे दे दी हैं... आहा!! मेरा सर्वश्रेष्ठ भाग्य... इस अंतिम जन्म में हर पल भगवान मेरे साथ है... स्वयं भगवान मुझ आत्मा को सर्व सम्बन्धों की पालना दे रहे हैं...* बाबा के सानिध्य से प्राप्त इन सर्व शक्तियों को धारण कर... मैं आत्मा धारणा स्वरूप बन गयी हूँ...

➳ _ ➳ जैसे ही मैं आत्मा अपने पवित्र स्वरूप में टिकती हूँ... मुझ आत्मा के सम्पर्क में जो भी आत्माऐं आती हैं... वह मन-वचन-कर्म से पवित्रता का अनुभव करती हैं... मैं आत्मा स्वराज्य के धर्म और बाबा द्वारा दी गई सभी मर्यादाओं का पालन करती हूँ... *संकल्प व स्वप्न में भी मेरे प्यारे शिवबाबा के

सिवाय और कोई नही... मुझे बाबा को प्रत्यक्ष करना ही है... करना ही है... सभी आत्माओं को बाबा का बनाना ही है...*

➳ _ ➳ कर्मक्षेत्र में जो भी आत्माऐं मुझ आत्मा के सम्बन्ध सम्पर्क में आती हैं... मुझ आत्मा की रूहानियत उन्हें बाबा की ओर आकर्षित करती हैं... *मेरे मधुर बोल... उन्हें शांति का अनुभव कराते हैं... मेरे नयनों से उन्हें अलौकिकता... स्पष्ट दिखाई देती है... मेरे हर कर्म से... चाल चलन से... झलकती हुई दिव्यता उन्हें भरसक मेरी ओर आकर्षित करती है...*

➳ _ ➳ मेरा हर बोल बाप समान... जो बाबा का संकल्प... वही मुझ आत्मा का संकल्प... मेरी हर श्वांस... हर सेकंड... तन-मन-धन... बाप समान बन रहा है... *मैं आत्मा जहाँ भी जाती हूँ... सारे वातावरण को रूहानियत की खुशबू से महका देती हूँ... बाबा से प्राप्त गुणों और शक्तियों का प्रभाव... हर कर्म से झलकती दिव्यता... अलौकिकता... सभी आत्माओं को सोचने में मजबूर कर देती है... आखिर इन ब्रह्माकुमारियों को ऐसा क्या मिला है जो ये सदा खुश रहती हैं...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔